

# आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



झारखण्ड के इतिहास में पहली बार  
शिक्षा क्रांति में जुड़ा नया आयाम

# 80 उत्कृष्ट विधालय का हुआ दुभारण

प्रवेश  
प्रारंभ



हेमन्त सोरेन  
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

325 प्रखण्ड स्तरीय आदर्श विधालय | 4,091 ग्राम पंचायत स्तरीय आदर्श विधालय

अत्याधुनिक आधारभूत संरचना

CBSE मान्यता प्राप्त अंग्रेजी माध्यम स्कूल

विज्ञान एवं भाषा लैब्स

डिजिटल स्मार्ट क्लास

सूचना प्रौद्योगिकी का मजबूत ढंचा

राष्ट्रीय स्तर का एवेल प्रशिक्षण











# संपादकीय

## कितने मुर्छिकल हैं सरहद के सवाल

दे श के नैसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने एक कार्यक्रम के दैरीन में चल रही चीनी गतिविधियों पर रोशनी डालते हुए जो कुछ बताया, उससे साफ़ है कि चीन की आक्रमकता में कोई कमी नहीं आयी है। नेवी चीफ के मुताबिक चीनी हरकतों के चलते उस समृद्ध क्षेत्र में रोज़ ही किसी रूप में संघर्ष होता है। ऐसे में उनका यह आकलन ठीक ही है कि अभी भले बात छोटे-मोटे टकरावों तक सीमित हो, युद्ध छिड़ने की आशंका से इनकार नहीं आयी है।

चीन ने जिस तरह से अब तक के तमाम समझौतों का उल्लंघन करते हुए सीमा पर एकतरफा ढंग से यथार्थित बदलने का प्रयास किया, उससे उस विश्वास को छोट पहुंच जो आपसी दिखते का आधार था।

राजनाथ सिंह से चीन की खरी-खरी सुनाने में कोई करम बाकी नहीं रही। चीन का जोर इस बात पर था कि सीमा पर जो भविष्यद है, उन्हें एक तरफ करके रिश्तों को सुधारने पर ध्यान दिया जाये। लेकिन भारत ने स्पष्ट किया कि रिश्तों में सुधार की बात तब तक नहीं की जा सकती, जब तक सीमा पर गलवान थिङ्ट और भारत के बाहर रहने की चीज़ों की विश्वासीत बदलते हुए तनाव समाप्त न कर लिया जाये। चीन ने जिस तरह से अब तक के तमाम समझौतों का उल्लंघन करते हुए सीमा पर एकतरफा ढंग से यथार्थित बदलने का प्रयास किया, उससे चीनी दिखते की आधार था। ऐसे में सीमा पर बने हालात को नजरअंदाज करके रिश्तों को सुधारने का सुझाव नहीं स्वीकार किया जा सकता। लेकिन किसी भी तरह का गतिरोध बातचीत से ही दूरता है। इसीलिए भारत ने अपना पक्ष मजबूती से रखते हुए भी संवाद में कोई बाधा नहीं डाली। ऐससे अब भी बैठक के सिलसिले में अभी चीनी नेताओं का आना जरी रहेगा। जुलाई में चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग भी आगे बढ़ते हैं। इस विश्वास का फायदा उठाते हुए बातचीत के जरिए सीमा विवाद की जटिलता कुछ कम की जा सकते हैं। वह दोनों देशों के लिए काफी देंदम होगा।

### अभिमत आजाद सिपाही

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी साजनीति में थीं। यह कहना नहीं है कि हिंदू बिल्कुल जी नहीं है। सबसे खास बात यह है कि अगर भाजपा मुसलमानों के लिए खास बात करता है, तो चीनी रक्षा मंत्री नहीं है।

हलाल-हिजाब के मुद्दे कर्नाटक में बेअसर यही हुआ, जब कोर मतदाताओं को लगा कि उन्हें हल्के में लिया गया है। अपने कोर मतदाताओं को खुश रखना उतना ही जरूरी है, जितना स्विंग मतदाताओं को अपनी ओर खींचना। जब पार्टीयं अपनी विचारधारा का दावा नहीं करते तो उनका प्रताप हो जाता है। बाकी समाज में अपेक्ष शब्द को फैलाने के लिए कोई प्रेरित आधार नहीं है आप आदमी पार्टी का एक अच्छा उदाहरण है, जिसने 2011 में लोकपाल आंदोलन में अर्जित वैचारिक आधार को खत्म कर दिया। सिक्के का दूसरा पहलू तब होता है जब आप अपनी विचारधारा और अपने दावे में इन्हें डबल जाते हैं कि विवेक मतदाता वास्तव में आप को अलग-थलग पाते हैं। आप इसे कम्युनिट पार्टीयों और यहाँ तक कि मायावती के नेतृत्व वाली बसपा के बारे में कह सकते हैं जिसके स्विंग मतदाता को खींचने के प्रयोग 2007 में थोड़े समय के लिए सफल हुए थे।

राजनीति बनाम विचारधारा : यही कारण है कि जब भाजपा हिंदूत्व को बढ़ा चढ़ाकर पेश करती है या जब वह इसे कमतर आंकते हैं तो यह वैचारिक प्रतिबद्धता का सबल नहीं होता। यह इसे किया, तो इसने भरपूर लाभांश प्राप्त किया। लेकिन इसने भाजपा को अपने दर पर सत्ता में नहीं आने दिया। गठबन्धन सहयोगियों का विवास हासिल करने के लिए उन्हें नरम रुख अपना पड़ा और कठोर मुद्दों को ठंडे बरते में डालना पड़ा। भाजपा को उदारवादी मुख्योत्ता या अटल बिहारी वाजपेयी के रूप में मुख्योत्ता पेश करना पड़ा। फिर भाजपा लाल कृष्ण अडवानी तथा नरेंद्र मोदी के साथ कठिन रेखा पर आ गयी। जिन्होंने फिर से विकास पर बड़ा होने के लिए अपने दृष्टिकोण को नरम कर लिया। आप यहाँ जो देख रहे हैं वह एक पैर नैटैन है, एक टेढ़ा-मेढ़ा पैरन् जो



पिछे 2 आम चुनावों की ही बात कर रहे। 2014 में गोदी अभियान विकास और अर्थिक प्रगति के बायदे के ईर्द-गिर्द केंद्रित था, जबकि 2019 का अभियान राष्ट्रीय सुधा और कल्याणी योगानों के ईर्द-गिर्द था। वह उत्तर प्रदेश का चुनाव हो गया था गुजरात का होने पिछे से पहले हिंदूत्व की कृष्णता का बायदा किया गया था। जब हिंदूत्व आंनी आवाज बुलंद करता है, तो चुनाव आम तौर पर कम से कम एक वर्ष दूर होता है।

अच्छे कारणों से हमें अक्सर बताया जाता है कि भारत की सत्तारूढ़ी भाजपा चुनाव जीतने के लिए हिन्दू राष्ट्रवाद की अपनी विचारधारा का उपयोग करती है। वैचारिक दावे ने मतदाताओं को ध्वीकरण करने में मदद की और भाजपा जीत गयी तो फिर हम कैसे समझते हैं कि भाजपा वास्तव में कर्नाटक विधानसभा चुनावों में हिंदूत्व को कमतर आंक रही है?

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी रक्षा मंत्री ली शांगफू शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एसएसीओ) के रक्षा पार्टियों के सम्मेलन में शरीकत करने भारत आए थे। वह गलवान घाटी में हुई झड़ी के बाद से किसी चीनी रक्षा मंत्री की पहली भारत यात्रा थी और इस दैरीन का बायद राज्यालय के नैसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने एक कार्यक्रम

के दैरीन हिंदू महासागर क्षेत्र में चल रही चीनी गतिविधियों पर रोशनी डालते हुए जो कुछ बताया, उससे साफ़ है कि चीन की आक्रमकता में कोई कमी नहीं आयी है। नेवी चीफ के मुताबिक चीनी हरकतों के चलते उस समृद्ध क्षेत्र में रोज़ ही किसी रूप में संघर्ष होता है। ऐसे में उनका यह आकलन ठीक ही है कि अभी भले बात छोटे-मोटे टकरावों तक सीमित हो, युद्ध छिड़ने की आशंका से इनकार नहीं आयी है।

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी रक्षा मंत्री ली शांगफू शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एसएसीओ) के रक्षा पार्टियों के सम्मेलन में शरीकत करने भारत आए थे। वह गलवान घाटी में हुई झड़ी के बाद से किसी चीनी रक्षा मंत्री की पहली भारत यात्रा थी और इस दैरीन का बायद राज्यालय के नैसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने एक कार्यक्रम के दैरीन हिंदू महासागर क्षेत्र में चल रही चीनी गतिविधियों पर रोशनी डालते हुए जो कुछ बताया, उससे साफ़ है कि चीन की आक्रमकता में कोई कमी नहीं आयी है। नेवी चीफ के मुताबिक चीनी हरकतों के चलते उस समृद्ध क्षेत्र में रोज़ ही किसी रूप में संघर्ष होता है। ऐसे में उनका यह आकलन ठीक ही है कि अभी भले बात छोटे-मोटे टकरावों तक सीमित हो, युद्ध छिड़ने की आशंका से इनकार नहीं आयी है।

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी रक्षा मंत्री ली शांगफू शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एसएसीओ) के रक्षा पार्टियों के सम्मेलन में शरीकत करने भारत आए थे। वह गलवान घाटी में हुई झड़ी के बाद से किसी चीनी रक्षा मंत्री की पहली भारत यात्रा थी और इस दैरीन का बायद राज्यालय के नैसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने एक कार्यक्रम के दैरीन हिंदू महासागर क्षेत्र में चल रही चीनी गतिविधियों पर रोशनी डालते हुए जो कुछ बताया, उससे साफ़ है कि चीन की आक्रमकता में कोई कमी नहीं आयी है। नेवी चीफ के मुताबिक चीनी हरकतों के चलते उस समृद्ध क्षेत्र में रोज़ ही किसी रूप में संघर्ष होता है। ऐसे में उनका यह आकलन ठीक ही है कि अभी भले बात छोटे-मोटे टकरावों तक सीमित हो, युद्ध छिड़ने की आशंका से इनकार नहीं आयी है।

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी रक्षा मंत्री ली शांगफू शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एसएसीओ) के रक्षा पार्टियों के सम्मेलन में शरीकत करने भारत आए थे। वह गलवान घाटी में हुई झड़ी के बाद से किसी चीनी रक्षा मंत्री की पहली भारत यात्रा थी और इस दैरीन का बायद राज्यालय के नैसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने एक कार्यक्रम के दैरीन हिंदू महासागर क्षेत्र में चल रही चीनी गतिविधियों पर रोशनी डालते हुए जो कुछ बताया, उससे साफ़ है कि चीन की आक्रमकता में कोई कमी नहीं आयी है। नेवी चीफ के मुताबिक चीनी हरकतों के चलते उस समृद्ध क्षेत्र में रोज़ ही किसी रूप में संघर्ष होता है। ऐसे में उनका यह आकलन ठीक ही है कि अभी भले बात छोटे-मोटे टकरावों तक सीमित हो, युद्ध छिड़ने की आशंका से इनकार नहीं आयी है।

हलाल-हिजाब जैसे मुद्दे या यहाँ तक कि टीपु सुल्तान की विरासत के ईर्द-गिर्द होने वाली बहसें कर्नाटक चुनाव में उतनी प्रभावशाली नहीं लगतीं, जितनी एक साल पहले राज्य चीनी रक्षा मंत्री ली शांगफू शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एसएसीओ) के रक्षा पार्टियों के सम्मेलन में शरीकत करने भारत आए थे। वह गलवान घाटी में हुई झड़ी के बाद से किसी चीनी र











